समझ साहस और संन्यास

(ओशो का एक पुराना प्रश्नोत्तर प्रवचन, जिसे आप उन दिनों के संदर्भ में पढ़ सकते हैं)

प्रश्न : ओशो, कुछ दिन पूर्व आपने कहा कि रूस में आपके संन्यासी बिना माला व कपड़े के रहते हैं। अभी इंदौर के एक शिविर में मा आनंद मृदुला ने कहा था कि जो लोग माला एवं कपड़े नहीं पहनते हैं, उन्हें उस तल के नुकसान हो सकते हैं जिन्हें वे जान भी नहीं सकते।

क्या किसी बुद्धपुरुष की करुणा फिर से क्रोध की खाइयों में उतर सकती है? इसी भय से मैंने संन्यास वापिस कर दिया, क्योंकि मैं न भीतर से संन्यासी था, न ही दो वर्ष से माला-कपड़े पहनता था।

ओशो, मेरी उपरोक्त मनःस्थिति पर प्रकाश डालने की अनुकंपा करें!

चंद्रप्रभु,
वीर पुरुष हो, तुम जैसे वीर पुरुषों के कारण ही तो भारत देश महान है! धन्य हो तुम!

इंदौर रूस का कब से हिस्सा हो गया? इंदौर में कौन-सी तुम्हें अड़चन आ रही थी? कौन फांसी लगा रहा था तुम्हारी? कौन-सी गर्दन कटी जा रही थी तुम्हारी? कायरता को छिपाने के लिए तुम्हें यह बात मिल गयी। इसी को मैं कहता हूं कि तुम जो सुनना चाहते हो सुन लेते हो। इतने दिन में तुमने इतनी बात सुनी कि मैंने कहा कि रूस में संन्यासी बिना माला एवं कपड़े के रहते हैं। तुम्हारा दिल बाग-बाग हो गया। तुमने कहा : 'वाह! अरे यही तो हम कर रहे थे इंदौर में। तो जब रूस में रह सकते हैं, तो इंदौर में क्यों नहीं रह सकते?'

मगर तुम्हें मालूम है रूस के वे जो संन्यासी हैं, उन्होंने तो चाहा था कि वे कपड़े और माला में रहें, मैंने उन्हें मना किया है। तुमने पूछा था? दो साल कायर की तरह तुम छिपे रहे। न तुमने खबर दी, न तुमने बताया। जब दो साल से तुम पाते थे कि न भीतर से संन्यासी न बाहर से, तो क्या जरूरत थी छिपे रहने की? खबर कर दी होती कि मैं संन्यासी नहीं हूं।

और इंदौर में कौन-सी कठिनाई आ रही थी तुम्हें? तुम्हें रूस की कठिनाइयों का अंदाज है? तुम्हें रूस की मसीबतों का अंदाज है, कि रूस में जो भी व्यक्ति एक जरा-सी भी ऐसी कोई बात करता हुआ पाया जाए जो सरकारी धारणा के विपरीत है, फिर उस व्यक्ति का पता ही नहीं चलता!

ख्रुश्चेव जब हुकूमत में आया तो एक सभा में बोल रहा था कम्यूनिस्टों की। और स्टेलिन की खूब निंदा कर रहा था, जी भर कर निंदा कर रहा था। जीवन भर

का दबा-दबाया रोष प्रगट हो रहा था। एक आदमी ने पीछे से आवाज लगायी कि जब स्टेलिन जिंदा था, तब आप क्यों नहीं बोले? तब तो उसकी खुशामद करते रहे। पूरी जिंदगी! अब बड़ी बहादुरी दिखा रहे हैं!

ख्रुश्चेव एक क्षण रुका और उसने कहा कि मेरे बन्धु, कामरेड, आप कौन हैं? जरा खड़े हो जाएं। मैं जरा आपकी शक्ल देख लूं और अपना नाम बता दें।

कोई खड़ा नहीं हुआ और कोई नाम नहीं बताया। ख्रुश्चेव ने कहा कि देखते हैं आप, जब तक मैं जिंदा हूं तब तक तुम भी खड़े नहीं हो सकते और नाम नहीं बता सकते! यही हालत मेरी थी, जो हालत तुम्हारी है। मैं बोलता तो कभी का खतम हो जाता। तुम बोलो, घर नहीं पहुंचोगे।

रूस में कब कौन आदमी दफ्तर से ही नदारद हो जाएगा, कहना मुश्किल है। दीवालों के कान हैं। अपनी पत्नी से भी कोई व्यक्ति सच्ची बात नहीं कह सकता, क्योंकि कौन जाने; क्योंकि पत्नी स्त्रियों की कम्युनिस्ट लीग की सदस्या है। अपने बच्चों से मां बाप सच बात नहीं कह सकते, क्योंकि बच्चे बच्चों की कम्यूनिस्ट लीग के सदस्य हैं। वे वहां जाकर खबर देते हैं। राष्ट्र के हित में वे सब एक-दूसरे की खबर देते रहते हैं। कोई किसी से नहीं बोल सकता।

करुणा और क्रोध दोनों ही तुम्हारी दुनिया के शब्द हैं; बुद्धपुरुष दोनों के पार हैं। न वहां करुणा है न वहां क्रोध है। वहां परम सन्नाटा है, परम मौन है, परम शांति है। वहां परम शून्यता है।

दो रूसी एक रास्ते पर मिले। एक ने कहा : 'अहा, क्या सुंदर कार है! रूस में भी कैसी कैसी सुंदर कारें बनने लगीं!'

दूसरे ने कहा : 'यह रूसी कार नहीं है। रूस में इतनी बड़ी कारें नहीं बनतीं। और तुम भी जानते हो कि यह रूसी कार नहीं है। साफ दिखाई पड़ रहा है। यह अमरीकन गाड़ी है। इतनी बड़ी गाड़ियां रूस में बनती ही नहीं। इस तरह की गाड़ियां रूस में बनती ही नहीं। क्या तुमको इतनी भी अकल नहीं है?'

उस आदमी ने कहा : 'वह तो मुझे भी पता है कि यह कार कहां की बनी है। लेकिन मुझे यह पता नहीं कि आप कौन हैं!' इतना कहना भी खतरे से खाली नहीं है कि यह अमरीकी गाड़ी है। पता नहीं यह आदमी खबर कर दे, झंझट में पड़ जाओ तुम!

तीन आदमी जेल में बंद थे। तीनों पूछने लगे : 'भाई, किसलिए तुम आए?'

तो एक ने कहा कि मैं इसलिए जेल में बंद किया गया हूं कि मैं दफ्तर देर से पहुंचा। तो उन्होंने कहा कि यह अनुशासन भंग हो गया। तुम देर से क्यों आए?

दूसरे ने कहा : 'हद हो गयी! मैं दफ्तर जल्दी पहुंच गया, इसलिए मुझे बंद कर दिया। कहने लगे तुम कोई जासूसी करने आए हो? तुम दफ्तर पहले क्यों पहुंचे? तुम कोई फाइलें वगैरह उलट कर देखना चाहते हो? तुम इधर-उधर ताका-झांकी कर रहे थे।'

तीसरे ने कहा : 'हद हो गयी! मैं दफ्तर बिलकुल ठीक वक्त पर पहुंचा था, इसलिए बंद हूं।'

दोनों पूछने लगे : 'फिर तुम्हें क्यों बंद किया?'

उसने कहा कि उन्होंने कहा मालूम होता है तुम्हारे पास इम्पोर्टेड घड़ी है। तुम ठीक वक्त पर कैसे पहुंचे? रूसी घड़ी कहीं ठीक समय बता सकती है!

रूस की हालतों का तुम्हें चंद्रप्रभु, पता नहीं है। इसलिए मैंने उन्हें कहा। वे तो चाहते थे कि कपड़े पहनें। लेकिन क्या प्रयोजन है? उनको जेल में डलवा देने का कोई अर्थ नहीं है। उनको माला पहनवा देने से अगर उनका जीवन व्यर्थ ही संकट में पड़ जाए, तो काम को नुकसान ही पहुंचेगा। वे ध्यान कर रहे हैं और उनका तो भाव पूरा है। वे आज राजी हैं। जिस दिन मैं खबर कर दूंगा उस दिन वे पहन कर माला निकलने को राजी हैं, फिर जो परिणाम हों।

तुम्हें इंदौर में कौन-सी मुसीबत आ रही थी? तुम निपट कायर हो! और तुम बेईमान भी हो। और तुम अकेले नहीं हो ऐसे बेईमान, इसलिए तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दे रहा हूं। क्योंकि ऐसे बहुत बेईमान हैं, जो पूना आ जाते हैं और गैरिक वस्त्र पहन लिए, माला पहन ली; पूना से गये कि बस ट्रेन में ही वे गैरिक वस्त्र और माला छिपा देते हैं। अपने गांव पहुंचते हैं, उसी शक्ल में जिस शक्ल में चले थे; किसी को पता भी नहीं चलने देते कि वे संन्यासी हैं।

इसलिए तो मृदुला को मैं भेजता हूं जगह-जगह कि जरा देखना कौन-कौन... क्योंकि यहां तो तुम्हें कोई अड़चन नहीं है। और जब तुम भीतर-बाहर से संन्यासी थे ही नहीं, तो तुम क्या कह रहे हो कि मैंने संन्यास वापिस कर दिया! जो था ही नहीं वह तुम वापिस क्या खाक करोगे! पहले होना भी तो चाहिए वापिस करने के लिए! था ही नहीं संन्यास, तो तुमने वापिस क्या कर दिया? किसलिए कपड़े रखे हुए थे और माला रखे हुए थे। इसीलिए ताकि यहां जब आओ तब धोखा दे सको; यहां संन्यासी होने की अकड़ और संन्यासी होने का लाभ ले सको।

यह कायरता छोड़ो! संन्यास लेना हो तो संन्यासी रहो, नहीं लेना हो तो कोई मजबूरी नहीं है, किसी पर जोर-जबरदस्ती नहीं है। और मृदुला ने ठीक कहा कि तुम्हें ऐसे नुकसान हो सकते हैं। लेकिन नुकसान इसलिए नहीं होंगे कि बुद्धपुरुष की करुणा क्रोध में बदल जाती है; नुकसान इसलिए होंगे कि तुम्हारी बेईमानी ही तुम्हें गड्ढों में गिराएगी। तुम्हारा धोखा ही...। जो अपने गुरु को भी धोखा दे रहा है, इस दुनिया में इससे ज्यादा और

गया-बीता आदमी क्या होगा! कम से कम मेरे सामने तो अपने को प्रगट करो—जैसे हो वैसे ही अपनी नग्नता में, अपनी सहजता में; अपनी सरलता में, अपनी भूलें-चूकें जो भी हैं! अगर मेरे सामने भी तुम प्रगट नहीं कर सकोगे, तो कहां प्रगट करोगे?

मगर तुम बड़े होशियार आदमी मालूम होते हो। बजाए इसके कि तुमने मृदुला की बात का यह अर्थ लिया होता कि तुम बेईमानी कर रहे हो, जो कि गलत है, जिसका कि नुकसान तुम्हें होगा ही—तुमने मतलब यह लिया कि 'क्या बुद्धपुरुष भी करुणा से उतर कर क्रोध की खाइयों में जा सकते हैं?' बुद्धपुरुष न आते न जाते, जहां हैं वहीं हैं। करुणा और क्रोध दोनों ही तुम्हारी दुनिया के शब्द हैं; बुद्धपुरुष दोनों के पार हैं। न वहां करुणा है न वहां क्रोध है। वहां परम सन्नाटा है, परम मौन है, परम शांति है। वहां परम शून्यता है। वहां मन ही न बचा तो ये तो मन की ही लक्षणाएं हैं—क्रोध और करुणा, प्रेम और घृणा। ये सब तो द्वंद्व मन के ही हैं। जहां मन ही नहीं वहां कैसा द्वंद्व!

लेकिन तुम अपने हाथ से अपने को नुकसान पहुंचा सकते हो। तुम ही अपने को नुकसान पहुंचाओगे। तुम ही को भीतर पाखंड पकड़ रहा है। मैं पाखंड का इतना विरोध करता हूं और मेरे संन्यासी होकर भी तुम पाखंडी ही रहोगे! यह पाखंड है कि तुम यहां दिखाओ कि संन्यासी हो और इंदौर लौट जाओ और वहां दिखाते रहो कि हमें संन्यास से कुछ लेना-देना नहीं है।

मैं ऐसे लोगों को भी जानता हूं जो छिप कर मेरी किताबें पढ़ेंगे, जो मुझसे राजी हैं; मगर किसी के सामने कह न सकेंगे, किसी के सामने प्रगट न कर सकेंगे। सामने तो मेरी निंदा करेंगे। इतनी भी हिम्मत नहीं है, इतना भी साहस नहीं है! और अब तुम कह रहे हो कि मेरी उपरोक्त मनःस्थिति पर प्रकाश डालने की अनुकम्पा...साफ ही है, इसमें क्या प्रकाश डालना है और? अंधेरा ही अंधेरा है।

जीवन में प्रामाणिक होना सीखो। संन्यास नहीं तो संन्यास नहीं, कोई हर्जा नहीं। लेकिन प्रामाणिकता तो होनी ही चाहिए। एक सच्चाई तो होनी ही चाहिए। अभी भी तुम नाम संन्यास का ही उपयोग कर रहे हो। वह नाम भी तुम छोड़ दो। वह तुम्हें शोभा नहीं देता। लौट जाओ अपने पुराने नाम पर, वही ठीक है—लल्लूमल कल्लूमल जो भी तुम रहे हो! चंद्रप्रभु बड़ा प्यारा नाम है, इसको खराब न करो। इसको मैं किसी और को दूंगा। यह किसी और के काम आएगा। माला लौटा दी, कपड़े पहनना बंद कर दिए हैं, अब यह नाम को क्यों पकड़े हुए हो? इसको भी जाने दो। जैसे थे वैसे ही ठीक। 'पुनः मूषको भव!' फिर से चूहे हो जाओ।

तुमने चूहे की कहानी तो सुनी है न, कि चूहे ने बहुत परेशान होकर हनुमान चालीसा पढ़ा और बहुत हनुमान जी की भक्ति की! आखिर हनुमान जी को प्रगट होना पड़ा। कहा : 'क्यों रे चूहे के बच्चे, क्यों मेरे पीछे पड़ा है? और तू गणेश का वाहन है तो हमको क्यों सताता है? गणेश जी से ही क्यों नहीं बात करता?'

तो चूहे ने कहा : 'गणेश जी सुनते नहीं, ऊपर ही छाती पर चढ़े रहते हैं। बोली निकले कब! इतना भारी-भरकम शरीर, बोली निकलने ही नहीं देते। प्राण निकले जा रहे हैं, बोली कहां से निकले? इसलिए तुम्हें याद किया है। इतनी-सी कृपा करो कि मुझे बिल्ली बना दो। मैं चूहा रहते-रहते थक गया। एक तो गणेश जी सता रहे हैं और दूसरी यह बिल्ली। अगर गणेश जी पीछा छोड़ते हैं तो बिल्ली पीछे पड़ जाती है।'

हनुमान जी ने अपना पीछा छुड़ाने के लिए कहा : 'ठीक है, तू बिल्ली हो जा।'

बस वह तो दो दिन बाद फिर हनुमान चालीसा पढ़ने लगा, और जोर-जोर से म्याऊं-म्याऊं मचायी उसने! हनुमान जी फिर प्रगट हुए कि भाई तू कैसा आदमी है। अब तो शांति रख!

उसने कहा कि यह बिल्ली होने से काम नहीं चलेगा, मुहल्ले भर के कुत्ते मेरे पीछे लगे हैं। तुम मुझे कुत्ता बना दो!

'चल कुत्ता बन जा'—उन्होंने कहा—'मगर अब मेरा पिण्ड छोड़। और भी काम मुझे पड़े हैं दूसरे। हजारों मेरे भक्त हैं सबका मुझे ध्यान रखना पड़ता है।'

मगर वह तो दो दिन बाद फिर पढ़ने लगा हनुमान चालीसा। अब और जोर-जोर से भौंकने लगा। हनुमान जी ने कहा कि भाई तू चुप होगा कि नहीं? अब क्या तकलीफ आ गयी?

उसने कहा कि नहीं चलेगा यह। जब से कुत्ता हो गया हूं, तब से और मुसीबत आ गयी है। जो देखो वही डंडा मारता है! जहां जाता हूं वहीं से लोग भगाते हैं, दुत्कारते हैं। चैन से रहना मुश्किल है। और बाकी कुत्ते भी हमला करते हैं। कुत्तों में भी बड़ी कसा-कसी चलती है, बड़ी खींचतान मची हुई है, बड़ी राजनीति है। आप तो कृपा करके मुझे चूहा बना दो। वही अच्छा था। कम से कम गणेश जी का सत्संग भी रहता था। और ऐसी कुछ अड़चन न थी। अड़चनें बढ़ती चली गयी।

तो उन्होंने कहा : 'ठीक है भैया, तू फिर से चूहा हो जा। मगर अब हुनमान चालीसा मत पढ़ना। किताब लौटा दे।'

चंद्रप्रभु, अब तुम फिर से चूहे हो जाओ! इंदौरी चूहे ऐसे भी बहुत प्रसिद्ध चूहे होते हैं। मगर तुम्हें एक बहाना दिखा, तुमने देखा कि जब रूस में हो सकते हैं लोग संन्यासी बिना कपड़े और बिना माला के, तो इंदौर में क्यों नहीं!

और तुम कहते हो : 'मैं भीतर से भी संन्यासी नहीं हूं।'

तो तुम किसलिए नाहक के उपद्रव में पड़े हो? यहां भी आने की क्या जरूरत है? क्यों परेशान हो रहे हो? क्यों मेरा समय खराब करना, क्यों अपना समय खराब करना? यहां तो जीवन दांव पर लगाने की बात है। यहां तो जुआरियों का काम है।

— ओशो
उड़ियो पंख पसार
नौवां प्रवचन, पांचवा प्रश्न
(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)